वायु

शं नो प्रिदति भर्वंतु व्रतेमि। शंनो भवन्तु मरुतः स्वार्काः।।
शं नो विष्णु शमु पूषा नो अस्तु। शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायु।।

—ऋ०वेद 7/35/9

वायु वाकई पूजनीय तत्व है और उसकी पूजा करने में हम माहिर भी हैं। पर इस लेख को लिखने का कारण यह नहीं है न ही यह कि वायु प्राणों का आधार है यह सभी जानते हैं। इस विषय पर चर्चा की तो पीढ़ियों की बातें सुनने को मिलेंगी कि आप होते कौन हें जो वायु के बारे में बात करें और इतना अधिक लिखा जा चुका है कि कुछ भी इस मामले में कहना जरूरी नहीं है। फिर आप क्या लिखना चाह रहे हैं यह सवाल अहम हो जायेगा।

क्षिति जल पावक गगन समीरा पंच भूत जनित यह अधम शरीरा

वायु की उपयोगिता अभी तक सीमित ही बनी हुई है। अब इस सीमा से बाहर निकलने का मन कर रहा है ताकि हमारा जीवन और स्वच्छ व सुन्दर और व्यवहारपूर्ण हो जाये। साथ ही साथ नये व्यवहार व व्यापार में भी बढ़ोत्तरी हो ही जायेगी, ऐसा हमारा अनुमान है।

अभी तक हमारा मानना है कि वायुमण्डल असीमित है और इसमें खुद को साफ करने की बहुत क्षमता है। पर यह कथन/विचार कुछ हद तक ठीक भी है पर हम पूर्ण ध्यान दें तो वायुमण्डल की स्वच्छता बनाये रखने में योग भी दे सकते हैं जो आज के सन्दर्भ में जरूरी है। आम आदमी कहेगा कि हम क्या योग दे सकते हैं? भई आप ही दे सकते हैं तभी तो यह लिखा जा रहा है ताकि आपका इस ओर भी ध्यान जाये। पर्यावरण की रक्षा करना हमारा ही कर्तव्य है। हमारे पूर्वजों, जिन्होंने उपर्युक्त श्लोक लिखा था या पढ़ा-समझा होगा, इस बात को जानते थे। पर हम वायु की पूजा में लग गये और अर्थों को व्यवहार में लाना भी भूल गये हैं। क्योंकि हमारे बड़े-बूढ़े सब जानते हें, हमें कुछ भी नहीं जानना है। हमारी सभ्यता इतनी भव्य थी कि हम उसकी रोशनी में, चमक में, जिन्दा रह सकते हैं। आज की आवश्यकता इस चमक-दमक से आगे बढ़कर कुछ कर दिखाने की है ताकि हमारा वर्तमान व भविष्य भी इस वायु के चलते कुछ आगे बढ़ पायेगा।

वायु में बड़ी शक्ति है कि जो हमारे जीवन को आगे बढ़ाने में बहुत ही जरूरी है पर उससे भी आगे कुछ हो सकता है? आईये चलें, उन पर विचार करें। सम्भावनायें बहुत हैं पर उन पर अमल करेंगे तभी लाभान्वित होंगे।

अब तक हमें यह ज्ञात है कि सफाई करते समय वायुमण्डल दूषित होता है। जब झाड़ू लगाते हैं तो धूल, गन्दगी इत्यादि उड़कर वायु को दूषित ही करती है। पर यदि हम वायु का उपयाग करें तो गन्दगी खींचने में, तो वायुमण्डल दूषित नहीं होगा। यह होगा नया वायु का उपयोग और नया तरीका सफाई करने का। कूड़ा भी इकट्ठा हो जायेगा, धूल भी नहीं उड़ेगी सफाई करते समय। इससे हमारे सफाई कर्मचारियों के स्वास्य रक्षा में भी बहुत बड़ा इजाफा होगा।

दूसरा बड़ा उपयोग है वायु का कि हमारे यहां पर बिजली की कमी है और गांवों में सिर्फ उत्तर

प्रदेश में 36 लाख डीजल के पम्प लगे हुए हैं जबकि यदि हवा की ताकत का इस्तेमाल बिजली बनाने में किया जाये तो इतना डीजल तो बच ही जायेगा और पानी भी निकाला जा सकेगा, बिजली के बल्ब भी जलाये जायेंगे। एकदम करने की जरूरत नहीं एक स्थिति से दूसरी में पहुंचने की वरन् धीरे-धीरे कई कदमों में, चरणों में पूरा किया जा सकता है।

हाईब्रिड जेनरेटर होते हैं जो हवा व सूर्य की रोशनी में काम करते हैं और यह भी हवा का उपयोग है। जहां भी हवा की गति 5 फीट प्रति सैकेन्ड हो या इससे ज्यादा, इस तरह की इकाई लगाई जा सकती है। इस तरह की पवन चक्कियाँ हॉलैण्ड में बहुत पाई जाती हैं। हमारे देश में भी समुन्द्र के किनारे तमिलनाडु में, गुजरात में बहुत हैं पर उत्तरांचल के दूरदराज के गांवों में इनका उपयोग बहुत ही कारगर साबित होगा। जितना अधिक वायु का प्रयोग सफाई में होगा, उतनी ही पानी की बचत होगी। अनुमान कीजिये कितनी सम्भावनायें और बढ़ जायेंगी। नये उद्योग पनपेंगे।

हवा के दबाव से वह सभी मशीनें चलायी जा सकती हें जो बिजली से चल सकती हैं। मशीन टूल भी, जैसे आरा मशीन, ड्रिल, फर्श घिसाई के यन्त्र, टायर व ट्यूब रिपेयरिंग का काम इत्यादि-इत्यादि।

जब सूर्य की ऊर्जा मौजूद हो, हवा को दबाने (Compress) करने का काम किया जाये। बाद में उसी दबी हवा से तमाम तरीके की मशीनें चलाई जा सकती हैं, जब सूर्य ऊर्जा न हो, रात्रि में।

समय की मांग यह है कि हम वायु की शक्ति को पहचानकर उसका सही उपयोग करें और प्रयोग करें। पवनपुत्र हनुमान की पूजा भी यदि करना चाहें तो ''**वरुणेभ्य मरुतेभ्य नमः**'' की सिर्फ पूजा से ही हमारा काम नहीं चलेगा, न चल रहा है क्योंकि एक नया अंजाम लगा है वायु की शक्ति में जनशक्ति के साथ। और एक नया अध्याय शुरू हो सकता है।

यह भी सोचें कि इस पृथ्वी के अवयवों को मैं अपने पैदा होने के समय के मुकाबले अच्छी स्थिति में छोड़कर जाऊं ताकि मुझे भी दुनिया से जाते समय अच्छी अनुभूति हो। दुनिया को भी अच्छी स्थिति में छोडूंगा, तो दुनिया भी मुझे याद ही करेगी मेरे मरने के बाद में।

जीवन पानी के बिना कुछ दिन तक चल सकता है पर शुद्ध वायु के बिना मनुष्य तो क्या, सम्पूर्ण प्राणीमात्र के प्राण भी संकट में पड़ जायेंगे। इसलिए ही हमारे पूर्वज यज्ञ करते थे ताकि वायु शुद्ध रहे। एक बूंद घी से 5 मील के दायरे में वायु स्वच्छ हो जाती है। वायुमण्डल को स्वच्छ करने में पेड़ों का बहुत ही अधिक हिस्सा रहता है तो हम सबका यह कर्तव्य हो जाता है कि हम अधिक पेड़ों को लगायें व उनकी रक्षा करें।

—रश्मि उमेश रोहतगी
24161 नीलन ड्राईव नौवी(मि०) सं०रा०अ० 48374-3754
248-471-5786 e-mail : rurohatgi@yahoo.com
website : www.rurohatgi.com